७७ मानव जाति एक

आज दिनांक **१३-०६-१३ दिन** ...

मानव जाति एक होने का आधार, मानव का बनावट है | मानव बनने में मानव का कोई हाथ नहीं है | अर्थात प्रयास नहीं है | सह-अस्तित्व विधि से मानव की स्थिति बनी हुई है | यही होने का मतलब है | होने के रूप में सह-अस्तित्व को पहचाना जाता है | रहने के रूप में चारों अवस्था अपने अपने आचरण के रूप में रहना देखा जाता है | मानव स्वयं में स्थापित है | सहअस्तित्व ही इसका कारण है | सह-अस्तित्व का स्वरूप पहले स्पष्ट किया गया है | सत्य, व्यापक रुपी सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है | होने का प्रवृत्ति सह-अस्तित्व में है | केवल सत्तामयता से, केवल वस्तुमूलक विधि से विकास और जागृति होता नहीं | पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था तक इस धरती पर होने के रूप में प्रमाणित हो चुकी है, जो जड़,चैतन्य प्रकृति के रूप में गण्य है | जड़ प्रकृति दो भाग में गण्य है | चैतन्य प्रकृति दो भाग में गण्य है | इसकी गणनाएँ हो चुकी हैं | मानव ने पा लिया है | गणना करने का अधिकार मानव में देखा गया है | फलस्वरूप पहचानने का नौबत आयीजिसमें से चैतन्य प्रकृति में मानव गण्य है | कुल मिलाकर चैतन्य प्रकृति को चलते फिरते रूप में देखा गया है | जड़ प्रकृति को एक जगह में स्थिर रहने के रूप में देखा गया है | मिट्टी एक ही जगह में रहता है | धातुएं एक ही जगह में रहते हैं | मणियां एक ही जगह में रहते हैं | इस तरह पदार्थावस्था की वस्तुओं को एक ही जगह में रहने की स्थिति में देखा जाता है | इसी प्रकार प्राणावस्था की वस्तुओं को एक ही जगह पर रहते हुए देखा जाता है | ये दोनों जड़ प्रकृति में गण्य है |

अर्थात एक जगह में रहने के रूप में | एक जगह में रहने से निश्चित आचरण देखा गया है | मानव में अभी तक निश्चित आचरण तय नहीं हुआ क्योंकि मानव को जाति के रूप में एक देखना बना नहीं | धर्म के रूप में एक होना बना नहीं, सत्य को देखना बना नहीं | इसी कारणवश अभी तक मानव एक होना सम्भव नहीं हुआ | यह तभी सम्भव है जब मानव जाति एक हो, मानव धर्म एक हो | इसको भले प्रकार से हम समझ पाते हैं, जी पाते हैं, प्रमाणित कर पाते हैं | प्रमाणित होने का आधार केवल जीना है जबकि यह देखने में आया है कि एक भुनगी निश्चित आचरण करता है, मच्छर का स्वरूप एक ही प्रकार से आचरण करता है | मक्खी का स्वरूप एक सा काम करता है | आहार, विहार,व्यवहार में भी एक सा होने के आधार पर एक सा होते हैं | इसी प्रकार मानव आहार, विहार, व्यवहार में एकरूपता को पाने के बाद ही अखण्ड समाज, सार्वभौमता होता है | ऐसी अखण्डता और समाज का व्यवस्था ही सार्वभौम व्यवस्था होना पाया गया है | इस प्रकार से मानव अपने विकास को जागृति के रूप में देखा गया है | मैं भी एक मानव परम्परा का संतान हूँ | मैंने इसको अच्छी तरह से देखा है | आगे मानव का धर्म एक होना बताया गया है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज